वाचिक अधिगम (Verbal Learning) → यह

अधिगम सिर्फ मनुष्यो तक ही सीमित है। वाचिक अधिगम से तात्पर्य ऐसे अधिगम से होता है जिसमे व्यक्ति अक्षरो अक्षरो से बने सार्थक अर्थहीन शब्दो, व्याख्या चिन्हो, अंको के अर्थो को सीखता है। उसके आशय को समझता है। हम जानते है कि मनुष्य विभिन्न वस्तुओ, घटनाओ तथा इन सबके लक्षणो के बारे में मुख्यत: शब्दो के माध्यम से ही ज्ञान अर्जित करते है। एक शब्द का दूसरे शब्दो से साहचर्य बन जाता है। प्रयोगात्मक मनोविज्ञान मे इस अधिगम का महत्व इसलिए है क्योंकि वास्तव मे हमे बहुत सारे तथ्यो का ज्ञान शब्दो के माध्यम से होता है।

ऐसी कई विधियां विकसित की गयी है जिनके माध्यम से सीखने की इस प्रक्रिया का अध्ययन किया जा सकता है।

इन विधियो में निरर्थक शब्दो, परिचित ~~शब्द~~ शब्दो आदि सामग्री का प्रयोग किया जाता है।

वाचिक अधिगम के अध्ययन मे प्रयुक्त विधिया निम्न प्रकार है—

युग्मित सहचर अधिगम (Paired Peer Learning) — इस विधि का प्रयोग मातृभाषा के शब्दो के किसी अन्य विदेशी भाषा के पर्याय सीखने मे किया जाता है। इसमे दोनो भाषाओ के युग्मित सहचरो की एक सूची बनायी जाती है। प्रत्येक युग्म का पहला शब्द उद्दीपक जबकि दूसरा ~~शब्द~~ शब्द अनुक्रिया का कार्य करता है। इस विधि

में साधारण पहले शब्द के रूप में निरर्थक शब्द को दिखाकर फिर अनुक्रिया शब्द दिखाया जाता है तथा बाद में इन्हें पुनः स्मरण करने के लिए कहा जाता है। यह क्रिया तब तक चलती है जब तक प्रतिभागी द्वारा सभी शब्द सही नहीं बता दिये जाते हैं।

वाचिक अधिगम के अध्ययन विधियां

क्रमिक अधिगम (Gradual Learning) :- इसका प्रयोग यह जानने के लिए किया जाता है कि सीखते समय प्रतिभागी द्वारा कौन कौन सी प्रक्रियाएं उपयोग में की जाती है।

प्रतिभागी को एक सूची दी जाती है जिसमें निरर्थक, अधिक परिचित, कम परिचित तथा आपस में सम्बन्धित शब्द होते हैं फिर उसे इन शब्दों को उसी क्रम में बताना होता है जैसा सूची में दिया गया है। इसकी समय सीमा निर्धारित होती है। इसे क्रमिक पूर्वाभास विधि भी कहा जाता है।

मुक्त पुनः स्मरण (Free Recall) – इसमें प्रतिभागी को कुछ शब्दों की सूची एक निश्चित समय के लिए दर्शायी जाती है तथा उसे किसी भी क्रम में शब्दों को पुनः स्मरण करने के निर्देश दिये जाते हैं।

सूची में दस से ज्यादा शब्द होते हैं जो आपस में सम्बन्धित या असम्बन्धित हो सकते हैं।

Scanned with CamScanner

इसका उपयोग यह जानने के लिए किया जाता है कि शब्दों को याद करने के लिए व्यक्ति उन्हें किस तरह संगठित करता है। अतः इसे संगठित प्रक्रिया अथवा विधि भी कह सकते हैं।

सामाजिक अधिगम (Social Learning) -

— सामाजिक अधिगम, अधिगम (सीखने) से सम्बन्धित एक सिद्धान्त है। दूसरे लोगो के व्यवहार को देखकर उससे सीखना सामाजिक अधिगम कहलाता है। सामाजिक अधिगम, व्यक्तिगत अधिगम या समूह अधिगम की अपेक्षा अधिक बड़े पैमाने पर होता है। इसके द्वारा व्यवहार में परिवर्तन हो भी सकता है और नहीं भी हो सकता है।

दूसरो को देखकर उनके अनुरूप व्यवहार करने के कारण अथवा दूसरों के व्यवहारों को अपने जीवन में उतारने तथा समाज द्वारा स्वीकृत व्यवहारों को अपने जीवन मे धारण करने तथा अमान्य व्यवहारो को त्यागने के कारण ही यह सिद्धान्त सामाजिक अधिगम सिद्धान्त कहलाता है। इसी को बाण्डुरा का अनुकरण द्वारा व्यवहार मे रूपान्तरण का सिद्धान्त या सामाजिक अधिगम सिद्धान्त भी कहते है। बाण्डुरा के सामाजिक अधिगम को अवलोकन या निरीक्षणात्मक अधिगम (Observational Learning) भी कहते है। इस अधिगम के मुख्य बिन्दु इस प्रकार है।

Scanned with CamScanner

- सामाजिक अधिगम मे अधिगमकर्ता किसी प्रतिमान (आदर्श या माडल) को देखता और सुनता है।
- प्रतिमान द्वारा किये गये व्यवहार को अधिगमकर्ता ज्ञानात्मक प्रक्रियाओ द्वारा मस्तिष्क में संग्रहित करता है।
- बालक प्रतिमान द्वारा किये गये व्यवहार के परिणामो का निरीक्षण करता है।
- इसके बाद अधिगमकर्ता स्वयं प्रतिमान के व्यवहार का अनुकरण करके संबलीकरण (Reinforcement) की आशा करता है।
- पुनर्बलन (संबलीकरण) धनात्मक या ऋणात्मक हो सकता है। लोगो से धनात्मक पुष्टिकरण मिलने पर बालक उस व्यवहार को सीख लेता है और किसी व्यवहार के प्रति लोगो का नकारात्मक रुख होने पर उस व्यवहार को त्याग देता है।

अधिगम के संज्ञानात्मक सिद्धान्त (Cognitive Principle of Learning) —

व्यवहारवाद उपागम मे अधिगम को विद्यार्थियो के प्रत्यक्ष व्यवहारो के रूप में देखा गया है, जबकि संज्ञानात्मक उपागम मे अधिगम को एक आन्तरिक मनोवैज्ञानिक वृत्ति अवबोधन, सम्प्रत्यय निर्माण, ध्यान, स्मृति तथा समस्या-समाधान के रूप मे समझा जाता है, इस उपागम मे विद्यार्थी सर्वप्रथम समस्या से सम्बन्धित सम्पूर्ण अवस्थिति/वस्तु का अवबोधन करता है, समस्या वस्तु के विभिन्न तत्वो मे एक सम्बन्ध ढूंढता है और तत्पश्चात समस्या के समाधान की कार्यनीति तैयार करता है।

Scanned with CamScanner

(i) – अधिगम एक सक्रिय प्रक्रिया है जिसके द्वारा संज्ञानात्मक संरचना में परिवर्तन अन्तर्निहित है।

(ii) – अधिगम के लिए संज्ञानात्मक प्रयत्न तथा बोधात्मक विवेक (समझ) की आवश्यकता होती है।

अधिगम की संज्ञानात्मक अवधारणा (Concept of Cognitive Principle of Learning) – संज्ञानात्मक सिद्धान्त के अन्तर्गत इस बात की विवेचना की जाती है कि व्यक्तियों में स्वयं के प्रति तथा अपने वातावरण के प्रति विवेक किस प्रकार विकसित होता है और वे अपने वातावरण के सन्दर्भ में कैसे कार्य करते है।

संज्ञानात्मक सिद्धान्तवादियों के अनुसार अध्यापन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा विद्यार्थियों में तर्क या अन्तर्दृष्टि का विकास होता है। कक्षा सम्बन्धी अनुभवों को विद्यार्थी के व्यक्तिगत लक्ष्यों से सम्बन्धित कर दिया जाता है।

संज्ञानात्मक उपागम अधिगम में बोध को बल व महत्व दिया जाता है। इस उपागम के अनुसार अधिगम एक जटिल प्रक्रिया है जिसके फलस्वरूप संज्ञानात्मक संरचना में परिवर्तन आ जाते है अर्थात हम कह सकते है कि अधिगम संज्ञानात्मक संरचना में आया परिवर्तन है। सामान्य रूप से ये परिवर्तन तीन प्रकार की प्रक्रियाओं द्वारा होते है। ये प्रक्रियाएं है—

(1) विभेदीकरण (Decentralization)
(2) व्यापकीकरण (Elaboration)
(3) पुनर्संरचनीकरण (Re construction)

Scanned with CamScanner

विभेदीकरण मे व्यक्ति पहले स्वयं के और अपने वातावरण के विशिष्ट पहलुओ मे विभेदन करता है। उदाहरणार्थ, एक शिशु प्रत्येक पुरुष को अपना पिता समझता है। बाद मे वह पिता, भाई, चाचा, ताऊ इत्यादि मे भेद करना सीख जाता है। इस प्रकार संज्ञानात्मक संरचना अधिक विशिष्ट बन जाती है।

समाभ्यीकरण में मूर्त एवं विशिष्ट उदाहरण प्रस्तुत किये जाते है और इनके आधार पर बच्चे व्यापकीकरण अथवा समाभ्यीकरण करना सीख जाते है। अवधारणाओ में भेद करके बच्चा विभेदीकृत अवधारणाओ का उनके विशिष्ट गुणो के आधार पर वर्गीकरण करता है। इस प्रक्रिया को समाभ्यीकरण कहते है। उदाहरण के लिए, बच्चा पहले विभिन्न आकृतियो जैसे - वृत, त्रिभुज, चतुर्भुज आदि का अन्तर समझता है तत्पश्चात इन विभेदीकृत अवधारणाओ की एक व्यापक अवधारणा बना लेता है - ज्यामिति। इस प्रकार विभिन्न अवधारणाओ का एकीकरण / व्यापकीकरण कहलाता है।

Scanned with CamScanner

पियाजे का संज्ञानात्मक विकास का सिद्धान्त (Piaget's Cognitive Development theory) —

पियाजे को संज्ञानात्मक विकास के क्षेत्र से सम्बन्धित मनोवैज्ञानिकों में सबसे प्रभावशाली मनोवैज्ञानिक माना जाता है। यह एक प्रमुख स्विस मनोवैज्ञानिक थे जिनका प्रारम्भिक कार्यक्षेत्र जन्तुविज्ञान था किन्तु बाद में ये मनोविज्ञान के क्षेत्र से जुड़ गए। मनोविज्ञान के क्षेत्र में इन्होंने अल्फ्रेड बिने के निर्देशन में फ्रेंच विद्यार्थियों के लिए बुद्धि परीक्षणों के विकास पर कार्य किया, इसी समय इन्होंने बौद्धिक समस्याओं पर विद्यार्थियों द्वारा दी गई गलत प्रतिक्रियाओं से अधिक विचलित हुए। इस कारण बच्चों के ज्ञान प्राप्त करने की प्रक्रिया का अध्ययन करना इन्होंने प्रारम्भ किया। इन्होंने अपने बच्चों की मानसिक विकास प्रक्रिया अवलोकन एवं अध्ययनों के आधार पर संज्ञानात्मक विकास के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया।

पियाजे के अनुसार बच्चों में वास्तविकता के स्वरूप में चिंतन करने, उसकी खोज करने, उसके बारे में समझ बनाने तथा उनके बारे में सूचनाएं एकत्रित करने की क्षमता, बालक के परिपक्वता स्तर तथा बालक के अनुभवों की पारस्परिक अन्तःक्रिया द्वारा निर्धारित होती है।

पियाजे के सिद्धान्त की चर्चा करने से पूर्व उसमें प्रयुक्त महत्वपूर्ण शब्दों का जानना और समझना आवश्यक है। यह शब्द निम्न है।

Scanned with CamScanner